

तृतीयः पाठः



भगवदज्जुकम्

[भगवदज्जुकम् संस्कृत का एक प्रसिद्ध प्रहसन है। इसके रचयिता बोधायन कहे गये हैं। इसमें वसन्तसेना नामक गणिका अपनी सेविका परभृतिका के साथ उद्यान में विहार के लिए आती है। उसका प्रेमी रामिलक उससे मिलने वहाँ आता है। इसी बीच यम के द्वारा भेजा गया दूत जिसे वसन्तसेना नाम की किसी अन्य स्त्री के प्राण ले जाना है, सर्प बनकर गलती से इस वसन्तसेना को डस लेता है और उसका जीव लेकर यमलोक चला जाता है।

इसी उद्यान में एक परिव्राजक (संन्यासी) अपने शिष्य के साथ आये हुए हैं। वसन्तसेना को मृत देखकर शिष्य शाण्डिल्य दुःखी हो जाता है। तब परिव्राजक योग से अपना जीव गणिका की काया में प्रवेश करा देते हैं। गणिका जीवित हो जाती है। उधर गलत जीव लाने पर यमराज यमपुरुष को डाँट-डपटकर वापस भेजते हैं। उद्यान में वापस आकर यमपुरुष देखता है कि जिस गणिका के प्राण वह ले गया था वह संन्यासी की तरह सबको उपदेश दे रही है। तब यमपुरुष संन्यासी के खेल को आगे बढ़ाने के लिए गणिका का जीव संन्यासी के देह में डाल देता है। गणिका संन्यासी की तरह बोलती है, संन्यासी गणिका की तरह- इस उलट फेर से इस नाटक में एक विसंगत हास्यपूर्ण एवं रोचक स्थिति बन जाती है।]

नकारान्तपुल्लिङ्गः

(ततः प्रविशन्ति एकतः परिव्राजकस्य जीवेन आविष्टा वसन्तसेना, चेटी, रामिलकश्च;
परिव्राजकस्य निर्जीवदेहेन सह शिष्यः शाण्डिल्यः अपरतः अन्यया चेट्या सह वैद्यः)

वैद्यः - कुत्र सा?

चेटी - एषा खलु अज्जुका न तावत् सत्त्वस्थिता।



वैद्यः

- अरे इयं सर्पेण दष्टा।

चेटी

- कथमार्यो जानाति?

वैद्यः

- महान्तं विकारं करोतीति।
विषतन्त्रम् आरभे।
कुण्डल-कुटिलगामिनि!
मण्डलं प्रविश प्रविश।
वासुकिपुत्र! तिष्ठ तिष्ठ।
श्रू श्रू! अहं ते सिरावेधं
करिष्यामि। कुत्र कुठारिका।

गणिका

- मूर्ख वैद्य! अलं परिश्रमेण।

वैद्यः

- पित्तमप्यस्ति। अहं ते पित्तं वातं
कफं च नाशयामि।

रामिलकः

- भोः! क्रियतां यत्नः। न
खल्वकृतज्ञा वयम्।

वैद्यः

- गुलिकाः आनयामि।

(निष्क्रान्तः)

(ततः प्रविशति यमपुरुषः)

यमपुरुषः

- भोः! भर्त्सितोऽहं यमेन।
न सा वसन्तसेनेयं क्षिप्रं तत्रैव नीयताम्।
अन्या वसन्तसेना या क्षीणायुस्तामिहाऽनय॥
यावदस्याश्शरीरमग्निसंयोगं न स्वीकरोति तावत्सप्राणामेनां करोमि।
(विलोक्य) अये! उत्थिता खल्वियम्। भो! किन्नु खल्विदम्।
अस्या जीवो मम करे उत्थितैषा वराङ्गना।
आश्चर्यं परमं लोके भुवि पूर्वं न दृश्यते॥
(सर्वतोऽवलोक्य)





अये! अयमत्रभवान् योगी परिव्राजकः क्रीडति। किमिदानीं करिष्ये। भवतु, दृष्टम्। अस्या गणिकाया आत्मानं परिव्राजकशरीरे न्यस्य अवसिते कर्मणि यथास्थानं विनियोजयामि।

(तथा कृत्वा निष्क्रान्तः)

परिव्राजकः - (उत्थाय गणिकायाः स्वरेण) परभृतिके! परभृतिके!

शाण्डिल्यः - अरे! प्रत्यागतप्राणः खलु भगवान्।

परिव्राजकः - कुत्र कुत्र रामिलकः।

रामिलकः - भगवन्नयमस्मि।

शाण्डिल्यः - भगवन् किमिदम्? रुद्राक्षग्रहणोचितः वामहस्तः शङ्खवलयपूरित इव मे प्रतिभाति। नैव नैव।

परिव्राजकः - रामिलक! आलिङ्ग माम्।

(ततः प्रविशति वैद्यः)



वैद्यः

- गुलिकाः मया आनीताः। उदकम् उदकम्।

चेटी

- इदम् उदकम्।

वैद्यः

- गुलिकाः अवघट्टयामि।



गणिका

- (संन्यासिनः स्वरेण) मूर्ख वैद्य! जानासि कतमेन सर्पेण इयं स्त्री दष्टा?

वैद्यः

- अरे, इयं प्रेतेन आविष्टा।

गणिका

- शास्त्रं जानासि?

वैद्यः

- अथ किम्?

गणिका

- ब्रूहि वैद्यशास्त्रम्।

वैद्यः

- शृणोतु भवती।

वातिकाः पैत्तिकाश्चैव श्लैष्मिकाश्च महाविषाः।

त्रीणि सर्पा भवन्त्येते चतुर्थो नाधिगम्यते॥

- गणिका** - अयमपशब्दः। त्रयः सर्पा इति वक्तव्यम्। 'त्रीणि' नपुंसकं भवति।
- वैद्यः** - अरे, अरे! इयं वैयाकरणसर्पेण खादिता भवेत्।
- गणिका** - कियन्तो विषवेगाः?
- वैद्यः** - विषवेगाः शतम्।
- गणिका** - न न, सप्त ते विषवेगाः। तद्यथा।
रोमाञ्चो मुखशोषश्च वैवर्ण्यं चैव वेपथुः।
हिक्काश्वासश्च संमोहः सप्तैता विषविक्रियाः॥
- वैद्यः** - न खल्वस्माकं विषयः। नमो भगवत्यै। गच्छामि तावदहम्।
(निष्क्रान्तः)
(प्रविश्य)
- यमपुरुषः** - भगवन्मुच्यतां गणिकायाः शरीरम्।
- गणिका** - अस्तु।
- यमपुरुषः** - यथा अस्याः जीवविनिमयं कृत्वा यावदहमपि स्वकार्यमनुतिष्ठामि।
(तथा कृत्वा निष्क्रान्तः)
- परिव्राजकः** - शिवमस्तु सर्वजगतां परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः॥



अज्जुका	-	सम्मान्य महिला/गणिका के लिये संज्ञा और संबोधन
एकतः	-	एक ओर
परिव्राजकस्य	-	संन्यासी का
जीवेन	-	प्राण के साथ
आविष्टा	-	प्रविष्ट हुई
अपरतः	-	दूसरी ओर



चेटी	- दासी, नौकरानी
सत्त्वस्थिता	- प्राण में स्थित
दष्टा	- डस ली गयी
विषतन्त्रम्	- झाड़-फूँक को/विष भगाने की विद्या को
आरम्भे	- आरम्भ करता हूँ/शुरू करता हूँ
कुण्डलकुटिलगामिनि!	- हे कुण्डल के समान टेढ़ी चाल वाली
मण्डलम्	- ओझाओं के द्वारा साँप पकड़ने के लिये पृथ्वीतल पर बनायी जाने वाली वृत्ताकार आकृति
सिरावेधम्	- नाड़ी काटना
कुठारिका	- छोटी कुल्हाड़ी
पित्तम्, वातम्	- पित्त एवं वात (वायु) से उत्पन्न होने वाले रोग
क्रियताम्	- करें
यत्नः	- श्रम, परिश्रम, मेहनत
अकृतज्ञा	- कृतघ्न
गुलिकाः	- दवाई की गोलियाँ
निष्क्रान्तः	- निकल गया
भर्त्सितः	- डाँटा गया
क्षिप्रम्	- शीघ्र
नीयताम्	- ले जायें
क्षीणायुः (क्षीण+आयुः)	- जिसकी आयु समाप्त हो गयी है
इह	- यहाँ
अग्निसंयोगम्	- आग से संयोग
सप्राणाम्	- प्राण सहित को

अभ्यासः



1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

- (क) गणिकायाः नाम किम्?
(ख) परिव्राजकस्य शिष्यः कः आसीत्?
(ग) यमदूतः गणिकायाः जीवं कस्य शरीरे निदधाति?
(घ) परहितनिरता के भवन्तु?

2. सन्धिविच्छेदं कुरुत-

यथा - तत्रैव	तत्र	+	एव
भगवन्नयम्		+	
श्वासश्च		+	
खल्वकृतज्ञाः		+	
सप्तैताः		+	
करोतीति		+	

3. उदाहरणानुसारं अव्ययपदानि चिनुत-

यथा - राधा अपि नृत्यति।

- (क) त्वं कदा गृहं गमिष्यसि।
(ख) अधुना कः समयः।
(ग) महात्मागान्धी सदा सत्यं वदति स्म।
(घ) अहं श्वः विद्यालयं गमिष्यामि।
(ङ) इदानीं त्वं श्लोकं पठ।

अपि

.....
.....
.....
.....
.....

A vertical decorative border. The left side features a repeating pattern of stylized, colorful animals (fish, birds, and mammals) arranged vertically. The right side features a geometric zigzag pattern in blue and green. The animals include various species like fish, birds, and mammals, each with distinct colors and patterns. The geometric pattern consists of alternating blue and green triangles pointing in opposite directions.

[illegible]

♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦ ♦

.....

.....

[illegible]

.....

कृतज्ञः

लोके -

7. उदाहरणानुसारेण पदनिर्माणं कुरुत-

	मूलशब्दाः	वचनम्	पदानि
यथा-	शिल्पिन्	प्रथमा-एकवचने	शिल्पी
	धनिन्	द्वितीया-एकवचने	
	ज्ञानिन्	तृतीया-एकवचने	
	महत्वाकांक्षिन्	द्वितीया-बहुवचने	
	बहुभाषिन्	तृतीया-बहुवचने	
	दण्डिन्	द्वितीया-बहुवचने	

योग्यता-विस्तारः

पर्यायवाचिनः शब्दाः

- सर्पः - भुजगः, व्यालः, विषधरः चक्री, अहिः, पवनाशनः, भोगी।
 लोकः - संसारः, जगत्, भुवनम्, विश्वम्।
 शरीरम् - देहः, तनुः, गात्रम्, वपुः, कायः, विग्रहः।
 भूः - धरा, पृथ्वी, धरणी, अचला, अनन्ता, धरित्री, वसुधा, वसुन्धरा, वसुमती।
 क्षिप्रम् - द्रुतम्, शीघ्रम्, त्वरितम्, सत्वरम्, चपलम्, तूर्णम्, अविलम्बितम्।

- * प्रहसन रूपक का भेद है जो हास्यरस प्रधान होता है। भगवदज्जुकम् संस्कृत नाट्य साहित्य का प्रसिद्ध प्रहसन है। यह हमारे देश में तथा विदेशों में भी मूल संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में अनूदित हो कर विश्व के श्रेष्ठ नाट्यनिर्देशकों के निर्देशन में मंच पर अनेक बार खेला गया है।

इस प्रहसन का अभिनय केरल के मंदिरों में प्राचीन काल से ही पारंपरिक रूप से होता रहा है। इसकी दार्शनिक व आध्यात्मिक व्याख्या भी की जाती रही है।

- * राष्ट्रिय नाट्य विद्यालय (एन्.एस्.डी), दिल्ली के पाठ्यक्रम में यह स्वीकृत है।
 * दूरदर्शन धारावाहिक के रूप में (सात कड़ियों में) भी इसका प्रसारण हो चुका है।